%%A. D. 1190 ― 1435

%%or Śaka 1112 – 1357

%% p. 639

NO. 331

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Simhāchalaṃ<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 875; A. R. No. 288-G of 1899 )

Ś. 1291

(१।) स्वस्ति श्री । शाकाव्दे सोम-रत्न-ग्रहपति ग-

(२।) णिते ज्येष्ठ मासे दशम्यां शुक्लायां

(३।) जीववारे हरिशिखरिपते र्दीपनैवेद्य-

(४।) हेतो[ः] । [यः]प्रादाद्व्योम युग्गावनि-

(५।) शशि[ग]णिता नैचिकीः पुण्यसिद्ध्यै {} स श्री-

(६।) मानर्जुनाख्य क्षितिपतिरवतात् भूमि-

(७।) माचंन्द्रतारं ।। शकवरुषंवुलु-

(८।) १२९१ गुनेंटि ज्येष्ट विमल दशमि

(९।) यु गुरुवार<2>मुनांडु ओ

(१०।) ड्डवादि अर्जुनदेवराजु तनकु नभीष्टार्त्त(र्थ)सि-

(११।) द्धिग(गा) श्रीनरसि[ं]ह्यनाथुनि सन्निधिनि अखं-

(१२।) डदीपालु ८ वेलुंगुटकुं वेट्टिन मो-

<1. In the nineteenth niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 17th May, 1369 A. D. Thursday.>

%%p. 640

(१३।) दालु ८३६ । नित्यमुन्नु मापटि अवसर-

(१४।) मंदु पालरगिपं वेट्टिन [मो]दलु २६३

(१५।) इंतवट्टु धर्म्मवु आचंद्रार्क्क स्थाइ-

(१६।) गां वेट्टेनु ई धर्म्मवु श्रीवैष्णव रक्ष

(१७।) ई पालतोडनु वेदु तल्यलु अर्जुनभोग-

(१८।) मुगानु नित्यमुन्नु रात्रि अरगिपनु तो-

(१९।) रान पोलमु पदिपुट्लु आचंद्रार्क्क स्थाइगा

(२०।) ०वेट्टेनु ।। श्री श्री श्री [।।]